शास्त्री-I Sem. वस्तुनिष्ठ प्रश्न एवं उत्तर है
Author का निशान

Date 30/8/20

(1) भारत में पंचवर्षीय योजना कब प्रारम्भ हुई -(i) 1947
(ii) 1950 (iii) 1951 (iv) 1948

(2) अर्थशास्त्र की आधुनिक परिभाषा किसने दी है :- (i) Adam Smith (ii) रिकार्डो (iii) मैलथस (iv) मार्शल

(3) अर्थशास्त्र धन का विज्ञान है किस अर्थशास्त्री का कथन है-
(i) रिकार्डो (ii) मार्शल (iii) Adam Smith (iv) रिकार्डो

(4) मानवीय आवश्यकताएँ हैं :- (i) सीमित (ii) असीमित (iii)
(iv) इनमें से कोई नहीं।

(5) निम्नकोटि के सामान का निम्न लागू होता है :-
(i) लागू नहीं होता है (ii) इनमें से कोई नहीं (iii)
दोनों होता है

(6) मांग एवं इच्छा में अंतर होता है :- (i) अंतर नहीं होता है
(ii) अन्तर होता है (iii) इनमें से कोई नहीं।

(7) विश्व में जनसंख्या की दृष्टि से भारत का स्थान
(i) प्रथम (ii) द्वितीय (iii) तृतीय (iv) चौथा।

(8) नाबार्ड (NABARD) जो ग्रामीण विकास के लिए ऋण देता है, वह है एक- (i) विकास बैंक
(ii) बोर्ड (iii) खण्ड (iv) विभाग

(9) श्रम विभाजन एवं अपव्यय कार्य के लिये है :- (i) लाभकारी
(ii) अलाभकारी (iii) दोनों (iv) इनमें से कोई नहीं।

(10) पर्यावरण संतुलन के लिये जरूरी है- (i) वृक्ष (ii)
वर्षा (iii) वेश (iv) इनमें से कोई नहीं।

(11) भीड़ भाड़ की साक्षरता दर सबसे कम किस राज्य में है-
(i) तमिलनाडु (ii) केरल (iii) मिजोरम (iv) बंगाल

R.U.S. College Sukhsena
6/11/20

8235988074

Indian Economy की विशेषताएँ

(iii) इन देशों में औद्योगीकरण के अभाव में अधिकांश जनता गाँवों में रहती है।

आर्थिक विशेषताएँ :- पिछड़ी अर्थव्यवस्था में निम्नलिखित आर्थिक विशेषताएँ पायी जाती है - (i) प्रायः इन देशों में तकनीकी ज्ञान का अभाव पाया जाता है (ii) इन देशों में प्रायः निम्नस्तर के तकनीकी का प्रयोग होता है (iv) साथ ही साथ यातायात के साधनों का अभाव पाया जाता है। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक विशेषताएँ :→ (i) प्रायः पिछड़ी अर्थव्यवस्था में शिक्षा का अभाव पाया जाता है। (ii) समाज में स्त्रियों का निम्न स्तर होता है। (iii) इन देशों में लोगों का दृष्टिकोण परम्परागत अथवा रूढ़िवादी होता है। (iv) लोगों में उच्च सामाजिक वातावरण एवं मनोवृत्ति का अभाव पाया जाता है। (v) इन देशों में राजनैतिक अस्थिरता तथा पिछड़ापन पाया जाता है। (vi) प्रायः इन देशों के लोगों में सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना का अभाव पाया जाता है।

वास्तव में भारत एक अर्द्धविकसित एवं पिछड़ा हुआ देश है। लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था के पिछड़ेपन की प्रमुख विशेषताएँ यह है कि यहाँ आर्थिक साधनों की प्रचुरता रखते हुए भी भारतीय अर्थव्यवस्था पिछड़ी हुई है तथा यहाँ के लोग निर्धन हैं। दूसरे शब्दों में - "भारत प्रचुरता के बीच निर्धनता का विरोधाभास प्रस्तुत करता है।"

उपशास्त्री - for 2020 exam.

Bhaskar

Assoc. Prof.

प्रो० - ब्रजेश पाठक
एसो० प्रो० - अर्थशास्त्र
R.N.S. College Surhbeng
Purnea.

Bhaskar
6/11/20

भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताओं का वर्णन करें? (अर्थशास्त्र) उपस्थापन
संभावित परीक्षा-2020

उत्तर:→ वास्तव में भारत अर्द्धविकसित एवं पिछड़ा हुआ देश है, यद्यपि आर्थिक योजनाओं के अन्तर्गत भारत आर्थिक प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है, और इसकी प्रकृति विकासशील है फिर भी वास्तविकता यह है कि भारतीय अर्थव्यवस्था अभी भी पिछड़ी हुई है। भारत के पिछड़ेपन की प्रमुख विशेषताएं यह है कि यहाँ आर्थिक साधनों की प्रचुरता रहते हुए भी भारतीय अर्थव्यवस्था अभी भी पिछड़ी हुई है। जनसंख्या के दृष्टिकोण से विश्व में चीन के बाद दूसरा स्थान है और कृषि के दृष्टिकोण से विश्व में पाँचवा स्थान है। भारत में विपुल तरह की खनिज सम्पदा पड़ी हुई है, इसके बावजूद भारत एक निर्धन देश है" अतः ठीक ही कहा गया है कि - "भारत प्रचुरता के बीच निर्धनता का विरोधाभास प्रस्तुत करता है" (India presents a paradox of poverty amidst of plenty.) भारत के संबंध में M.L. Darling ने ठीक ही कहा है कि इस देश की मिट्टी धनी है किन्तु लोग निर्धन हैं। भारत में आर्थिक विकास की विशाल संभावनाओं के बावजूद यह अर्द्धविकसित या पिछड़ा हुआ देश है। भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ हैं:-

① आर्थिक विशेषताएँ:- भारत की आर्थिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं:- ① इन देशों में विकसित देशों की तुलना में प्रति व्यक्ति, वास्तविक आय बहुत कम होती है। ② आजीविका के लिए कृषि पर अत्यधिक निर्भरता पाई जाती है। ③ इन देशों में पूंजी की कमी पायी जाती है। ④ विकसित देशों की तुलना में इन देशों में प्राकृतिक साधनों का कम उपयोग होता है। ⑤ इन देशों में औद्योगीकरण का अभाव पाया जाता है। ⑥ पिछड़े देशों में धन एवं आय के वितरण में व्यापक विषमता पायी जाती है। ⑦ इन देशों में बेरोजगारी का व्यापक रूप से विद्यमान रहती है। ⑧ साथ ही साथ इन देशों में अल्पादकता का स्तर भी नीचा रहता है। जनसंख्या संबंधी विशेषताएँ:- 1- इन देशों में जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ती है। ⑪ लोगों की औसत आयु बहुत कम होती है।

P.T.O → क्रमशः

R.U.S. College
Sukhsena
Purnea

शास्त्री – II Part – II

मुद्रा के आवश्यक कार्य

Bhaskar

उपर्युक्त कार्यों के अलावा मुद्रा निम्न बहुत सारे कार्यों को संपन्न करती है। — 1. मुद्रा सामाजिक आय के वितरण का भी कार्य करती है। हम जानते हैं कि किसी भी अर्थव्यवस्था में उत्पादन का कार्य उत्पादन के साधनों के सहयोग से होता है। मुद्रा में के समस्त सहयोगी भागों को अनुमान लगाया जाता है। भी उत्पादन साधन को उसके सहयोग के अनुपात में भुगतान मुद्रा में ही किया जाता है। मुद्रा का यह कार्य समाज में आर्थिक न्याय दिलाने में सहायक होता है।

(2) साख का आधार (Basis of credit) :- हम लोग जानते हैं कि वर्तमान युग में संपूर्ण व्यापार साख पर आधारित है। आधुनिक युग में बैंक भी साख का निर्माण करते हैं किन्तु नकद (मुद्रा) के बिना ऐसा करना संभव नहीं है। इस प्रकार मुद्रा साख का आधार है। (3) सम्पत्ति की तरलता (Liquidity of Property) :- वास्तव में मुद्रा एजेंसी को तरल रूप प्रदान करते हैं यह एजेंसी भी तरलतम रूप है। मुद्रा के रूप में एजेंसी को किसी भी उपभाग में लगाया जाता है। इस दृष्टि से मुद्रा का बहुत ही अधिक महत्व है। उन उपरोक्त कार्यों के अलावा मुद्रा के या ही महत्वपूर्ण कार्य बताये गये हैं "So money is a matter of function four, a medium, a measure, a standard and store." वास्तव में आज मानव जीवन का प्रत्येक कार्य मुद्रा पर ही आधारित है। अर्थात मार्शल के शब्दों में – "मुद्रा वह धुरी है जिसके चारों ओर संपूर्ण अर्थव्यवस्था चक्कर काटती है।" (Money is the pivot around which the whole Economic science clusters.)

Bhaskar
(Asso Professor)
R.U.S. College Sukhsena
Purnea
6/11/20

8221559880 74

शास्त्री — PGSE Part शास्त्री II + शास्त्री

Brajesh Pachauri — मुद्रा क्या है एवं इनके विभिन्न कार्य क्या है (Prof. Economics)

2020 के संभावित प्रश्न उत्तर

मुद्रा के अन्तर्गत वे सारी वस्तुएं सम्मिलित की जाती है जो किसी समय अथवा स्थान में वस्तुओं को क्रय करने और खर्च करने में बिना संदेह अथवा विशेष जांच-पड़ताल के सामान्यतः प्रयुक्त होती है अर्थात "मुद्रा के अन्तर्गत उन सभी वस्तुओं को रखा जाता है, जो दैनिक क्रय-विक्रय, लेनदेन तथा ऋणों के भुगतान में स्वीकार की जाती है" इस संबंध में Crowther ने ठीक ही कहा है कि "मुद्रा वह वस्तु है, जो विनिमय के माध्यम के रूप में सामान्यतः सर्वग्राह्य हो तथा साथ ही साथ जो मूल्य संचय का भी कार्य करती हो।" मुद्रा के संबंध में डॉ. विल्स का यह कहना है कि - "मुद्रा वह वस्तु है, जो मुद्रा का कार्य करती है" (Money is what Money does) वास्तव में मुद्रा की यह परिभाषा विस्तृत है, कारण उनके अन्तर्गत वे सारी वस्तुएं आती है जिनका प्रयोग विनिमय के माध्यम के रूप में किया जाता है वास्तव में मुद्रा का एक सामान्य गुण स्वीकृति है वर्तमान आर्थिक व्यवस्था में मुद्रा के कार्यों का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है मुद्रा के कार्यों को हम तीन भागों में विभाजित कर सकते है :- (A) प्राथमिक कार्य (B) गौण कार्य (C) आनुषंगिक कार्य (A) के अन्तर्गत मुद्रा विनिमय का माध्यम है :- (i) मुद्रा ने समाज में विनिमय के माध्यम के रूप में कार्य किया है क्योंकि मुद्रा ने विनिमय माध्यम का कार्य करके वस्तु विनिमय प्रणाली (Barter system) की असुविधा को समाप्त कर दिया है (ii) मुद्रा वस्तु एवं सेवाओं के मूल्यों का मापने का भी कार्य करती है। प्राचीन वस्तु विनिमय प्रणाली में एक बड़ी कठिनाई यह निर्णय करना था कि एक वस्तु की भाँति विशेष के बदले अन्य वस्तु में कितनी मात्रा प्राप्त होना चाहिए, वास्तव में मुद्रा ने सामान्य मूल्य मापक का कार्य स्थान करके समाज के इस कठिनाई का हल कर दिया।

(B) गौण कार्य के अन्तर्गत मुद्रा के तीन कार्य आते है। - (i) स्थगित भुगतानों का मान :- यह विदित है कि आज का आर्थिक ढांचा साख पर आधारित है और साख अथवा उधार (Credit) मुद्रा के रूप में ही दिया जाता है उधार देते समय ब्याज की दर तथा भुगतान की किस्तें मुद्रा में ही निश्चित की जाती है। यह कार्य मुद्रा का बड़ा ही महत्वपूर्ण है (ii) मुद्रा मूल्य संचय (Store of value) का भी कार्य करती है। हम जानते है कि मनुष्य भविष्य के लिए कुछ बचा कर रखना चाहता है, मुद्रा इस कार्य को सुगमतापूर्वक सम्पादित करती है मुद्रा में बचत करना इस दृष्टि से भी अधिक है कि उसे बैंक में जमा करके ब्याज भी कमाया जा सकता है अर्थात मुद्रा मूल्य संचय का भी कार्य करती है

क्रमशः

सुखसेना कॉलेज